

प्रजातियां ध्रुवों की ओर बढ़ रही हैं

हाल में किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि फसल के कीट तथा रोग ध्रुवों की ओर बढ़ रहे हैं। और इनका यह फैलाव वैश्विक गर्मी की गति से ही हो रहा है।

यह तो पहले से अंदाज़ था कि वैश्विक जलवायु परिवर्तन (तापमान में वृद्धि) के चलते जीव प्रजातियों के वितरण में परिवर्तन होगा। यह भी अंदाज़ था कि आम तौर पर प्रजातियां भूमध्य रेखा से दूर हटेंगी और ध्रुवों के नज़दीक जाएंगी। कुछ पक्षियों व कीटों के ऐसे पलायन रिकॉर्ड भी किए जा चुके हैं।

अब एक्सेटर विश्वविद्यालय के डैन बेबर ने इसी बात का अध्ययन फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों और फफूंदों के संदर्भ में किया है। इसके लिए उन्हें आंकड़े मिले सेंटर फॉर एग्रीकल्चरल बायोसाइंस इंटरनेशनल से। यह सेंटर 1822 से फसली-कीटों और रोगों के आंकड़े एकत्रित

करता रहा है।

बेबर और उनके सहयोगी मार्क रामोतोव्स्की ने इस विशाल डेटा संग्रह में से मात्र 1960 के बाद के आंकड़ों का उपयोग किया - यह मानकर कि ये सबसे ज़्यादा भरोसेमंद होंगे। 612 विभिन्न फसल-कीटों के बारे में उन्होंने यह देखा कि उन्हें पहली बार कब किसी देश या क्षेत्र में पहचाना गया। इसी को उन्होंने उस कीट के वहां पहुंचने की तारीख माना। इसके आधार पर उन्होंने यह माना कि उस अक्षांश पर वह कीट पहली बार तभी पहुंचा होगा। बेबर व रामोतोव्स्की मानते हैं कि इन आंकड़ों में काफी दिक्कतें हो सकती हैं मगर फिर भी ये एक आम रुझान का खुलासा तो कर ही सकते हैं।

आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला है कि फसल-नाशी प्रति वर्ष औसतन 2.7 किलोमीटर की रफ्तार से ध्रुवों की ओर बढ़ रहे हैं।

वैसे विभिन्न प्रजातियों और विभिन्न समूहों के लिए यह रफ्तार अलग-अलग है। फफूंद, गुबरैले, पतंगे और तितलियां स्पष्ट रूप से ऊंचे अक्षांशों की ओर बढ़ रहे हैं। दूसरी ओर वायरस तथा कृमि निचले अक्षांशों की ओर। कुछ समूह ऐसे भी हैं जिनमें कोई उल्लेखनीय बदलाव नहीं देखा गया है।

फसल-नाशियों की इस तरह की गति का खाद्यान्न सुरक्षा की दृष्टि से काफी महत्व है। नए-नए इलाकों में नई-नई प्रजातियों का पहुंचना नई चुनौती खड़ी कर सकता है। (स्रोत फीचर्स)

